# व्यक्तित्व विकृतियाँ या चरित्र-विकृतियाँ (Personality Disorder OR Character Disorder)

व्यक्तित्व-विकृति की उत्पत्ति किसी तनावपूर्ण परिस्थिति से नहीं होती है और न ही चिंता के प्रति एक तरह के बचाव (Defense) के कारण होती है। इन विकृतियों का मुख्य कारण दोषपूर्ण व्यक्तित्व विकास होता है। इन व्यक्तित्व विकृतियों के लक्षण किशोरावस्था तक स्पष्ट हो जाते हैं, जो व्यस्कावस्था में भी जारी रहते हैं।

व्यक्तित्व विकृति एक- ऐसी विकृति है जिसमें व्यक्ति अपने वातावरण के प्रत्येक चीज़, घटनाओं एवं व्यक्ति के बारे में कुसमायोजित ढंग से प्रत्यक्षण करते हैं, जिससे उनके व्यवहार दोषपूर्ण हो जाते हैं, जो अन्य लोगों के लिए कष्टप्रद होते हैं और परिवार के लोग भी ऐसे व्यवहार से बहुत अधिक चिंतित हो जाते हैं।

Carson & Butcher (1992) के अनुसार — "सामान्यतः व्यक्तित्व विकृतियाँ व्यक्तिगत शीलगुणों का एक उग्र तथा अतिरंजित प्रारूप है, जो व्यक्ति में उत्पाती व्यवहार विशेषकर अन्तर्वैयक्तिक प्रकृति के उत्पाती व्यवहार को करने के लिए एक झुकाव उत्पन्न करता है।"

DSM-IV (1994) के अनुसार — "व्यक्तित्व विकृति व्यवहार तथा आंतरिक अनुभूतियों का एक ऐसा स्थायी पैटर्न होता है, जो व्यक्ति की संस्कृति की प्रत्याशाओं से लंबा रूप से विचलित होता है, अनम्य एवं व्यापक होता है, जिसकी शुरुआत किशोरावस्था या आरंभिक वयस्कावस्था में होती है, जो विशेष समय तक स्थिर रहता है तथा जिससे तकलीफ एवं ~~क्षति~~ हानि होती है।"

अर्थात् कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति का व्यवहार ऐसा हो जाता है, जो सामाजिक रूप से मान्य नहीं होता है। व्यक्ति में सामान्यतः किसी प्रकार की चिंता या विषाद आदि नहीं होता है।

Scanned with CamScanner

इस श्रेणी में शामिल होने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति का विकृत शीलगुण निरन्तरित हो। DSM-IV में व्यक्तित्व विकृति को Axis-II में रखा गया है। जिसे तीन समूहों में वर्गीकृत करते हुए, निम्नांकित 10 प्रकार बतलाये गये हैं।

## Personality Disorder

**Cluster-(A) -**

(i) विभ्रम व्यामोही व्यक्तित्व विकृति (Paranoid Personality Disorder)
(ii) Schizoid Personality Disorder
(iii) Schizotypal Personality Disorder

**Cluster-(B) -**

(iv) समाज विरोधी व्यक्तित्व विकृति (Antisocial Personality Disorder)
(v) Boarderline Personality Disorder
(vi) Histrionic Personality Disorder)
(vii) Narcissitic Personality Disorder

**Cluster-(C) -**

(viii) Avoidant Personality Disorder
(ix) Dependent Personality Disorder
(x) Obsessive-Compulsive Personality Disorder.

इन्हें समूहों में वर्गीकृत करने का आधार इनके लक्षणों में समानता को बतलाया गया है। समूह 'अ' में रखे गये व्यक्तित्व विकृतियों का व्यवहार सनकी, रहस्यमी, विचित्र एवं असामाजिक होते हैं। इसी प्रकार समूह 'ब' के व्यक्तित्व विकृतियों में व्यवहार संवेगिक, नाटकीय एवं अस्थिर होते हैं। समूह 'स' के व्यक्तित्व विकृतियों का व्यवहार चिंता तथा भय युक्त होते हैं।

→ **विभ्रम-व्यामोहित व्यक्तित्व विकृति** — ऐसे व्यक्तित्व विकृति वाले व्यक्तियों में अतिसंवेदनशीलता, किसी पर भी विश्वास नहीं करना तथा दूसरों पर शक करना, ईर्ष्या आदि शीलगुणों की

NOTES

प्रधानता होती है ये खुद को विशिष्ट साबित करने के लिए गलत कार्यों को भी बुद्धि के आधार पर सही ठहराने की कोशिश करते हैं ये लोग अपने पद एवं प्रतिष्ठा के प्रति अधिक सतर्क रहते हैं और दूसरों से ईर्ष्या या घृणा करते पाये जाते हैं

→ **Schizoid Personality Disorder** — इस रोग से ग्रसित व्यक्तियों में सामाजिक संबंधों को बनाये रखने एवं उन्हें निभाने की क्षमता नहीं होती हैं ये असामाजिक एवं एकान्तप्रिय व्यवहार दिखलाते हैं

→ **Schizotypal Personality Disorder** — इनमें और सिज़ोआयड व्यक्तित्व विकृति वाले व्यक्तियों में काफी समानता होती है परंतु इनके प्रत्यक्षण, चिंतन एवं बातचीत में सनकीपना (eccentricity) काफी अधिक होता है इनमें वास्तविकता का ध्यान तो होता है, फिर भी इनमें व्यक्तिगत एवं अन्धविश्वासपूर्ण चिंतन की काफी प्रधानता देखी जाती है

→ **समाज-विरोधी व्यक्तित्व विकृति** — इस प्रकार के विकृति वाले व्यक्ति आक्रामक, असामाजिक तथा सामाजिक नियमों को नहीं मानने वाले होते हैं ऐसे लोग किसी भी प्रकार के अनैतिक एवं असामाजिक कार्य करने में डरते नहीं हैं और इसे अपना अधिकार समझते हैं

→ **सीमान्त रेखीय (Boarderline) व्यक्तित्व विकृति** — ऐसे व्यक्तियों के मनोदशा में काफी परिवर्तन देखा गया है ये तुरंत क्रोधित होने वाले, अस्थिर, आक्रामक, तथा आवेगशील प्रकृति के होते हैं ऐसे व्यक्तियों का अन्तर्वैयक्तिक संबंध काफी अस्थिर तथा असंतोषजनक होता है और इनमें आत्महत्या की प्रवृति में पायी जाती है



Scanned with CamScanner

**→ Histrionic Personality Disorder** — ऐसे व्यक्तियों का व्यवहार काफी उत्तेजनशील, अपरिपक्व एवं अस्थिर होता है। ये किसी भी कार्य को काफी उत्तेजित होकर करते हैं। इनमें बहिर्मुखी प्रवृत्तियों की प्रधानता होती है तथा दूसरे से अनुमोदन पाने की तीव्र लालसा रखते हैं।

**→ आत्ममोही व्यक्तित्व विकृति (Narcissistic Personality Disorder)** — ऐसे व्यक्ति काफी महत्वाकांक्षी होते हैं और अपनी इच्छा एवं विचार के आगे दूसरों के विचार को तुच्छ समझते हैं। इनमें खुद को महत्व देने की भावना काफी तीव्र एवं मजबूत होती है। ये काफी स्वार्थी होते हैं और इनमें परानुभूति (empathy) की अत्यधिक कमी पायी जाती है। ये अपने व्यक्तित्व में किसी प्रकार के दोष या विकृति की उपस्थिति को स्वीकार नहीं करते हैं।

**→ परिवर्जित व्यक्तित्व विकृति (Avoidant Personality Disorder)** — ऐसे व्यक्ति खुद को अकेला महसूस करते हैं, एकान्तप्रिय, तथा लजालु होते हैं। इनमें दूसरों द्वारा तिरस्कार या अवहेलना किये जाने के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता तथा डर बनी रहती है। इनका सामाजिक संबंध काफी सीमित होता है।

**→ अवलम्बित व्यक्तित्व विकृति (Dependent Personality Disorder)** — ऐसी विकृति वाले व्यक्ति दूसरों पर अत्यधिक निर्भरता दिखलाते हैं। इनमें आत्म-विश्वास की कमी पायी जाती है। यदि इन्हें अकेले छोड़ दिया जाये तो ये काफी बेचैनी तथा घबड़ाहट का अनुभव करते हैं। पर्याप्त क्षमता एवं कौशल होने पर भी ये खुद को असहाय पाते हैं।

**→ मनोग्रसित बाध्यता व्यक्तित्व व्यक्ति (Obsessive-compulsive Personality Disorder)** — ऐसे विकृति वाले व्यक्ति काफी औपचारिक एवं गंभीर प्रकृति के होते हैं। ये अपने



Scanned with CamScanner

15 DECEMBER SUNDAY

APPOINTMENTS

सभी कार्य नियमबद्ध एवं कानून संबद्ध रूप से पूरे करते हैं और दूसरों से भी ऐसा ही अपेक्षा रखते हैं। ऐसे लोगों में हास्य की अक्षमता होती है और ये अतिकर्तव्यनिष्ठ एवं दृढ़ प्रकृति के होते हैं जो अपनी भावनाओं (हृदय की) की भी अभिव्यक्ति नहीं करते। इनका जीवन जीने का तरीका काफी दृढ़, सिद्धिपन तथा बाध्यता पूर्ण आवेशों से भरा होता है।